Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
April 2024 5(4), 1002–1006

डूंगरसी रत्नु काव्य समीक्षा

पूजा चारण[1], प्रो शरद राठौड़[2]
[1]शोधार्थी, IIS (deemed to be) University, Jaipur
[2]IIS (deemed to be) University, Jaipur

Corresponding Author
पूजा चारण,

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i4.2024.3634

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

राजस्थान वीरों की भूमि है। यहां का इतिहास विश्व पटल पर विशेष स्थान रखता है। चारण कवियों के साहित्यक योगदान ने इतिहास को अमरत्व दिया। चारण कवियों में डूंगरसी रतनू महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं, जिन्होंने अपने काव्य में वीर रस के साथ-साथ भक्ति और प्रकृति का भी सुंदर वर्णन किया। उनके काव्य में वीरता, युद्ध, अश्व विद्या, और पौराणिक आख्यानों का उल्लेख मिलता है। डूंगरसी का संबंध चारणों की रतनू शाखा से था और वे जैसलमेर के दरबार से जुड़े हुए थे। इसके अलावा, डूंगरसी के काव्य में प्रकृति का वर्णन भी मिलता है। पक्षियों के व्यवहार और आकाशीय पिंडों का वर्णन उनकी प्रकृति विज्ञान की जानकारी को दर्शाता है। अलंकारों का कुशल प्रयोग उनके काव्य की विशेषता है। सरल शब्दों में गूढ़ भावों का संप्रेषण, विभिन्न रसों का समन्वय, और शब्दावली में अरबी, फारसी और संस्कृत का प्रयोग उनकी भाषाई क्षमता को दर्शाता है। उनके काव्य में वीरता और भक्ति का ऐसा अद्भुत मिश्रण है जो राजस्थान की चारण परंपरा को समृद्ध बनाता है।

1. प्रस्तावना

राजस्थान वीरों की भूमि है। यहां का इतिहास विश्व पटल पर विशेष स्थान रखता है। चारण कवियों के साहित्यक योगदान ने इतिहास को अमरत्व दिया। चारण कवियों में डूंगरसी रतनू महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं, जिन्होंने अपने काव्य में वीर रस के साथ-साथ भक्ति और प्रकृति का भी सुंदर वर्णन किया। उनके काव्य में वीरता, युद्ध, अश्व विद्या, और पौराणिक आख्यानों का उल्लेख मिलता है। डूंगरसी का संबंध चारणों की रतनू शाखा से था और वे जैसलमेर के दरबार से जुड़े हुए थे। इसके अलावा, डूंगरसी के काव्य में प्रकृति का वर्णन भी मिलता है। पक्षियों के व्यवहार और आकाशीय पिंडों का वर्णन उनकी प्रकृति विज्ञान की जानकारी को दर्शाता है। अलंकारों का कुशल प्रयोग उनके काव्य की विशेषता है। सरल शब्दों में गूढ़ भावों का संप्रेषण, विभिन्न रसों का समन्वय, और शब्दावली में अरबी, फारसी और संस्कृत का प्रयोग उनकी भाषाई क्षमता को दर्शाता है। उनके काव्य में वीरता और भक्ति का ऐसा अद्भुत मिश्रण है जो राजस्थान की चारण परंपरा को समृद्ध बनाता है।

2. संकेताक्षर

वीर गाथा,चारणकवि,भक्तिरस,प्रकृतिवर्णन,पौराणिकअख्यान, चित्तौड़ युद्ध, अश्व विद्या, अस्त्र-शस्त्र ज्ञान, पक्षी विज्ञान, खगोल ज्ञान, वीरमदेव, पृथ्वीराजजैतावत, काव्य कौशल ,डिंगलभाषा,अरबी-फारसी शब्दावली।

राजस्थान के आदिकालीन साहित्य में वीर गाथाओं की भरमार है। मोतीलालमेनरिया का मानना है कि राजस्थान में आदिकाल से लेकर 16वीं शताब्दी तक वीर काव्य लिखा जाता रहा। राजस्थान के वीर काव्य की रचनाओं में चारण कवियों का योगदान सदैव सराहनीय रहेगा, जिन्होंने समाज के हर पहलू को अपने काव्य द्वारा उजागर किया। मध्यकाल में चारण कवियों में दुरसाआढा, माला सादू, जाडामेहडू का विशिष्ट स्थान है। इनकी रचनायें किसी न किसी रूप में प्रकाश में आई है एवं इनके काव्य की प्रशंसा भी इतिहासकारों द्वारा की गई है। मध्यकालीन चारण कवियों में एक नाम है। डूंगरसी रत्नू का, जिन्होंने राजस्थान के संघर्षशील वातावरण में अपने काव्य का सृजन किया। डूंगरसी चारणों की एक सौ बीस शाखाओं में रतनू शाखा के थे। डूंगरसी ने जैसलमेर के रावलहरराज और उनके पुत्र रावल भीम पर काव्य रचना की। जिससे यह संकेत मिलता है कि डूंगरसी उनके आश्रित कवि थे। परन्तु कुछ गीतों के अंशों व तत्कालीन काव्य ग्रंथों से यह भी प्रमाणित होता है कि डूंगरसी व उनके पूर्वजों का मारवाड़ के राजा मोटा राजा उदयसिंह के दरबार में आना जाना था। मोटा राजा के काल तक वे मारवाड़ के किसी ग्राम में बसते थे परन्तु 1643 विक्रम संवत में रूष्ठ हो उदयसिंह ने चारणों-ब्राह्मणों से सांसण गाँव छिन लिये थे। इस कारण आउवा का प्रसिद्ध धरना हुआ। डूंगरसी रतनू के परिवार ने भी मारवाड़ छोड़ जैसलमेर के राजा हरराय के दरबार में आश्रय लिया। इस प्रसंग में डूंगरसी ने कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहा है -

“जुजिठलदेवादिपंडवहरजोवता, घणूजोवतांकेल
घरि। किण्हीउवेलबिये नह कीधौ, हरे ऊवेलऊवेल हरि

डूंगरसी रतनू को जैसलमेर दरबार व बादशाह अकबर के दरबार में भी विशिष्ट सम्मान प्राप्त था। जिसका प्रमाण डूंगरसी रचित दोहे से स्पष्ट होता है।

“मांगतमहिरिजेतामिलै, ऊतिम भेंट संपेखइम।
अकबर जलाल अवतार गति, तू फरमाओ करांतिम“

डूंगरसी के गीतों में जैसलमेर प्रांत और वहां के शासकों का वर्णन मिलता है। डूंगरसी वीर रस के कवि थे। साथ ही साथ उन्होंने भक्ति रस व प्रकृति वर्णन भी किया है। डूंगरसी जिस काल से संबद्ध थे वह काल युद्धों का, अशांति का समय था। यह सर्वविदित है कि लेखक जिस काल से संबंध रखता है, उस काल की परिस्थितियों के दर्शन उसके काव्य में अवश्य दिखते है।डूंगरसी में काव्य को पौराणिक अख्यान से शुरू किया है। उसके उपरांत कवि ने वीर काव्य का सृजन किया।

राजस्थान के चारण कवियों ने अपनी काव्य रचनाओं द्वारा यहां के वीरों के गुण गौरव का वर्णन किया है। पर स्वयं के कुल, स्वयं के परिचय तथा काव्य साधना पर प्रसंगवश ही कुछ लिखा हैं। ऐसी स्थिति में इन कवियों के जीवन से संबंधित जानकारी मिलना अत्यधिक कठिन है। इसी कारण डूंगरसी के जीवन की अधिक जानकारी नहीं मिल पाती। डूंगरसी ने जैसलमेर के शासकों का वर्णन किया है। साथ ही साथ कवि ने अपने समकालीन राजपूत वीरों की भी युद्ध वीरता, उदारता, शूरविरता और शौर्य प्रशंसों में वीर गीत, कवित दोहे आदि लिखे है। इन वीरों में राव मालदेव, चन्दसेन, सुरतानदेवडा, महाराणाउदयसिंह, महाराणा प्रताप, राव रायसिंह उल्लेखनीय है। साथ ही डूंगरसी ने वीरमदेवोतमेडतिया, पृथ्वीराजजैतावत, मानसिंहअखगजोत, भैरवदानचांपावत आदि सांमत सरदारों की वीरता, उदारता का सजीव चित्र प्रस्तुत किया है।

डूंगरसी वीर रस के कवि थे। प्रस्तुत शोध पत्र में सर्वप्रथम डूंगरसी के वीर रस से भरपूर कविता का विवेचन प्रासंगिक होगा।

वीरारसचंदरन्कवावरतां, मेछघूणतांपरबत माल।
तूं दस मास न हंस डॉलीयो, ताल दुहेतौहेकाइ ताल।।
खट चत्रमासराउखेडेचा, गहणिजिकोइतूंजेमगहै।
ओकोईनिमखआतमांअवरां, रन्कवंहत न ठौड़रहै।

कवि द्वारा उक्त वर्णित दोहे में चन्दसेनराठौड़ की वीरता की प्रशंसा में वीर रस का बहुत सुन्दर प्रयोग किया गया है।वीररस के साथ-2 डूंगरसी द्वारा प्रयोग में लाये गये रूपकों का सर्जन कवि के काव्य कौशल अधिक प्रशंसनीय बना देता है।

सुंडि पटा सझिहाकसारसी, कमधजघोंघगर कहर।
मैमंतजैमल घड़ा प्रिथीमल, धसीयोसाम्हौ खड़ग घर ।।

उक्त वर्णित दोहा कवि की अतुलनीय कौशल का प्रमाण है। जिसमें कवि हाथी से पृथ्वीराजजैतावत के मेडता के युद्ध में विभिन्न रण कौशल का वर्णन करता है।

राजस्थान के वीरों के साथ-साथ कवि ने सम्राट अकबर द्वारा चित्तौड़ अभियान के वर्णन में भी बहुत सुन्दर उपमा का प्रयोग करते दोहा लिखा है-

करिवा कहर कंदन, अकबर दल आणविय।
भेलणलकाभेलिया, प्रमि नव दूणपदम्म ।।

इस दोहे में डूंगरसी ने शाही सेना के इस अभियान की श्री रामचंद्र की लंका चढ़ाई से समता प्रकट करते हुए सुन्दर उपमा का प्रयोग किया है। डूंगरसी के काव्य में तत्कालीन समाज की धार्मिक सहिष्णुता के बारे में जानकारी भी प्राप्त हो जाती हैं क्यूंकि कवि के बादशाह अकबर के अभियान की तुलना राम जी के लंका अभियान से की है।

डूंगरसी के जीवन के बारे में और उनके शिक्षा विषय में भी अधिक जानकारी नहीं मिलती परन्तु उनके काव्य को पढ़कर यह तो समझ सकते है कि डूंगरसी बहुत विद्वान कवि थे क्योंकि उन्हें रामायण, महाभारत, भागवत पुराण, अश्व शास्त्र, शस्त्र विद्या, छंद शास्त्र, खगोल, भूगोल आदि की उत्तम जानकारी थी। कविताओं में डूंगरसी ने पौराणिक एवं ऐतिहासिक पात्रों को भी उल्लेख किया है। जो उनके पौराणिक साहित्य के अध्ययन के ज्ञान को उजागर करता है।

डूंगरसी के पौराणिक ज्ञान को निम्न लिखित दोहे से जाना जा सकता है।

वसुधा कारणिवाच, केकइ ली दसरथ
कन्हांवनिश्रीरामवसाविया,
आरूहियौजाणैअजणनिखेनंदीधौखि।

डूंगरसी ने पौराणिक कथाओं का विवेचन बहुत बारीक से उनका अध्ययन कर किया है। उन्होंने अपने वर्णन में दशरथ, कैकयी, राम, वैदेही, अर्जुन, अभिमन्यु, अश्वत्थामा आदि पात्रों का उल्लेख किया है।

कवि डूंगरसी वीर रस और पौराणिक कथाओं के अध्ययन के साथ उनका शास्त्र ज्ञान भी बहुत उत्कृष्ट था। डूंगरसी अश्व विद्या में भी निपुण थे जिसका वर्णन निम्न लिखित पंक्ति से होता है।

वाजिन चहूं वलाऊ, फिरैकटालूफैरियौ।
मेहा आगम मोरडै, कीधौजाणिकेलाउ ।।

उक्त पंक्ति में कवि ने घोड़े की चंचलता और शरीरिक स्थिति का बहुत सुन्दर वर्णन किया है। डूंगरसी ने घोड़े के शिक्षक हेतु उक्त वर्णित पंक्तियों में कटालू शब्द का व मयूर की छत्री हेतु केलाउ शब्द का सुन्दर व सार्थक प्रयोग किया। ऐसा उदाहरण राजस्थानी साहित्य की दीर्घ परम्परा में अन्यत्र सहज नहीं मिलता।

चारण कवियों ने मध्यकाल में वीर रस के साथ-साथ भक्ति रस में भरपूर काव्य का भी सृजन किया था। डूंगरसी का काव्य भी इसका अपवाद नहीं है। डूंगरसी के भक्ति काव्य का उदाहरण निम्न वर्णित पंक्तियों में मिलता है।
आदि गुर अंत बिना ओक,
विद्या विधि मडीयविमेकं।
अलख अलिखितसामिसहंसुर, पुर अमरपुर पति।।
कवि ने ईश्वर को संसार का निर्माण अविनाशी बता संसार का पालन कर्ता, सभी पर दया दिखाने वाला बताया है। डूंगरसी के काव्य में भक्ति वर्णन, ईश्वर में आस्था के साथ-साथ उनके वैश्विक ज्ञान की जानकारी भी मिलती है। डूंगरी के भक्ति काव्य का एक अन्य उदाहरण उनके द्वारा रचित "छापयपरमेसरजी रो" में ईश्वर द्वारा अपने भक्त की लज्जा रखने का बहुत सुन्दर वर्णन किया है।
राजिलज्जराहवी, लंक सीता सतवंती।
राजिलज्जराहवी, चीर पुरैद्रोपति ।।
राजिलज्जराहवी, वेद ब्रह्मा रावालै ।
भंजियै जनम दाजैमुगति, कृपानाथडूंगरकहै।।
डूंगरसी के काव्य में उनके प्राकृतिक विश्लेषक होने की भी जानकारी मिलती है। डूंगरसी पक्षी विज्ञान, खगोल ज्ञान का अनुभवी ज्ञाता थे।जिसका उदाहरण उनका यह दोहा है-
ग्रीवकरीवगिणैह, हंस ताणी गति हालियौ,
डांणजिसाकाखेड़ है, जांणि पंत में पेखियौ।।
उक्त पंक्तियाँ डूंगरसी के पक्षी विज्ञान का रोचक वर्णन करती है। साथ ही कवि ने निशा के अंत और प्रभात के आगमन को समीप बताते हुए कहते 'उईलांक्यौ आकाश" अर्थात दक्षिण में उदित होने वाला अगस्त्य तारे का आकाश में उदय होने का समय आ गया है।

डूंगरसी ने गिरी सुमेल युद्ध का वर्णन जिस प्रकार किया है वैसा उदाहरण अन्यत्र कहीं नहीं दिखता। डूंगरसी ने मालदेव के सेनापति कूपामेहराजति, पृथ्वीराजजैतावत व वीरमदेव पर दोहे लिखे है। कवि ने मालदेव के समय में घटित घटनाओं एवं उनके द्वारा विजित प्रदेशों का वर्णन अपने काव्य द्वारा किया है। साथ ही डूंगरसी ने अपने काव्य के द्वारा चित्तौड़ विजय का भी विस्तृत विवेचन किया है। कवि के मुगल सेना द्वारा चित्तौड आक्रमण का वर्णन बहुत सुन्दर दोहे के द्वारा किया है।
अति साहण असमान, हूंकलछूटतैहुऔ।
पडै नहीं पवंगांतणै, लिअलआगाकांन ।।
युद्ध वर्णन के साथ-साथ डूंगरसी के काव्य में वात्सल्य, प्रेम, मृत्यु आदि का भी वर्णन बहुत रोचकता से हुआ है। युद्ध के समय कवि ने वीरवरजयमल व उसके भाई ईश्वरदास मध्य संवाद का बहुत सुन्दर वर्णन किया है मानो भरत और भगवान राम का भ्रातृ-प्रेम संवाद हो रहा हो।
डूंगरसी अपने समय का श्रेष्ठ कवि थे। जिन्होंने अपने काव्य द्वारा हर पक्ष को उजागर किया है चाहे वह शासकों वर्ग हो या उनके सेनापतियों की वीरता हो। डूंगरसी समकालीन मुगल बादशाह अकबर केविषय में भी लिखते हैं। कवि की कलम ने भाषा, अलंकार, उपमा आदि का सुन्दर प्रयोग कर अपने काव्य को अधिक प्रखरता से वर्णित किया है। कवि के काव्य ने हर पक्ष को

छुआ है, चाहे वह प्रकृति हो या अश्व विद्या हो। कवि ने हर पक्ष का वर्णन बहुत बारिकी से किया है। वीरों की शौर्यता का वर्णन तो चारण कलम की शान रही है, परन्तु डूंगरसी के काव्य में हर पक्ष का सटीक वर्णन है। डूंगरसी पर बहुत अधिक शोध नहीं हुआ जिसका कारण ये भी कहा जा सकता है कि जैसलमेर राज्य में शोध कार्य में पिछड़ा हुआ है।उपलब्ध कविताओं के आधार पर डूंगरसी को मध्यकालीन राजस्थान के श्रेष्ठ कवियों की श्रेणी माना गया है।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

सौभाग्य सिंह लिखित डूंगरसी रत्नु ग्रंथावली

डॉ. मोहन लाल जिज्ञासु लिखित चारण साहित्य का इतिहास

जगदीश रत्नु लिखित चारण समाज के गौरव

हरि प्रसाद शास्त्री लिखित राजस्थान में राजस्थानी साहित्य की खोज

आचार्य बदरी प्रसाद साकरिया संपादित नैणसीरी ख्यात

मोतीलालमेनारिया लिखित राजस्थानी भाषा और साहित्य